कलीसिया अध्याय 37

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **याकूब 1-3**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (यहूदा 1 से 3) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही माता-पिता]* **(1) 2 कुरिन्थियों 12:14ख-15क**

स्मरण वचनों की आठवीं श्रृंखला (श्रृंखला ज)"मसीही अभिभावकों" के सन्दर्भ में है।
पांच स्मरण वचनों के शीर्षक हैं:
(1) खर्च करके प्रेम करना। 2कुरिन्थियों 12:14ख-15क।
(2) क्षेत्रों में उन्नति करें। नीतिवचन 22:6।
(3) परमेश्वर की वचन की शिक्षा दें। व्यवस्थाविवरण 6:6-7।
(4) परमेश्वर में परवरिश करें। इफिसियों 6:4।
(5) अनुशासन में होकर प्रेम करें। नीतिवचन 13:24।

दो दो करके *मनन करें*, स्मरण करें और अवलोकन करें।
(1) व्यय करके प्रेम करना। 2कुरिन्थियों 12:14ख-15क। क्योंकि लड़के वालों को माता पिता क लिए धन बटोरना न चाहिए, पर माता पिता को लड़केवालों के लिये। मैं तुम्हारी आत्माओं के लिये बहुत आनन्द से खर्च करूंगा, वरन आप भी खर्च हो जाऊंगा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]* **धन का प्रबन्ध करना**

परिचय दें। यह शिक्षा धन का उचित ढंग से प्रबन्ध करने तथा उनका अभ्यास करने के बारे में है। हम जानेगें कि इस धरती पर व्यतीत किये जाने वाले जीवन और स्वर्ग के अनन्त जीवन पर धन का क्या प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा हम इस संसार में *साधारण मसीही जीवन-शैली* के बारे में भी सीखेगें।

क. धन का उचित प्रबन्ध करने का महत्व

1. मनुष्य के धरती पर व्यतीत किये जाने वाले साधारण जीवन पर धन का प्रभाव।

खोजें और चर्चा करें। धरती पर बिताये जाने किसी व्यक्ति के साधारण जीवन पर धन का क्या प्रभाव पड़ सकता है?

(1) धन किसी को सन्तुष्ट नहीं कर सकता है।

सभोपदेश 5:10-17 में हम पढ़ते हैं,"जो रूपये से *प्रीति* रखता है वह रूपये से तृप्त न होगा; और न जो बहुत धन से प्रीति रखता है, लाभ से।.....जब सम्पत्ति बढ़ती है तो उसके खाने वाले भी बढ़ते हैं.....परन्तु धनी के धन के बढ़ने के कारण उसको नींद नहीं आती।" धन अपने आप में अच्छा या बुरा नहीं होता। लेकिन, धन के प्रति लोगों का *रुख* इस बात को निर्धारित करता है कि धन का उनके जीवन पर अच्छा असर पड़ता है या बुरा। जब लोग धन को *प्रेम* करते हैं, तो धन उपार्जन उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य बन जाता है। वे लगातार ज्यादा पैसा कमाना और ज्यादा पैसा खर्च करना चाहते हैं। और उनके पास कभी पर्याप्त धन न होने के कारण उनकी भूख कभी नहीं मिटती। धन कभ किसी व्यक्ति को सन्तुष्ट नहीं कर सकता और न ही उसकी वजह से किसी व्यक्ति को शान्ति मिलती है। धन को प्रेम करने वाला व्यक्ति कभी अपने पास पायी जाने वाली चीज़ों से सन्तुष्ट नहीं होगा। वह हमेशा सिर्फ पैसा कमाने की फिराक में ही लगा रहेगा।

(2) धन बुराई करने का कारण बन सकता है।

1तीमुथियुस 6:10 में लिखा है, "क्योंकि रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है।" *रूपया* या *धन* अपने आप में बुराई की जड़ नहीं होता है। लेकिन धन का *प्रेम सब* प्रकार की बुराईयों की जड़ों में से एक है। कड़वाहट एक और प्रकार की बुराई की जड़ है(इब्रानियों 12:15)। निम्नलिखित कुछ उदाहरण हमें बताते हैं कि रूपये का प्रेम किस प्रकार से बहुत तरह की बुराइयों की जड़ हो सकता है:

- बहुत से लोग अपने जीवन साथी की दौलत को प्राप्त करने के मकसद से विवाह करते हैं। क्योंकि उन्होंने गलत मकसद से विवाह किया होता है इस कारण उनके जीवन में बहुत सी परेशानियां खड़ी हो जाती हैं।

- धन का प्रेम बहुत से व्यापारियों को धोखा देने, घूस देने और भ्रष्टाचार में शामिल होने के लिए मज़बूर कर देता है। धन का प्रेम कई राजनेताओं को झूठ बोलने के लिए, कुछ आर्थिक घोटाले करने और धनी बनने के चक्कर में अपनी ही देश को बर्बाद करने की परीक्षा में डाल देता है।

- धन का प्रेम मण्डलियों के अगुवों अर्थात पासबानों को मण्डली से किसी विशेष राशि को जमा करने की परीक्षा में डाल सकता है।

- धन के प्रेम के कारण ही कई बार लोग चोरी करते,डांका डालते या कत्ल कर देते हैं। वास्तव में, रूपयों का प्रेम हर प्रकार की बुराई की जड़ है।

2. स्वर्ग में मनुष्य के अनन्त जीवन पर धन का प्रभाव।

खोजें और चर्चा करें। रूपयों को मनुष्य के स्वर्गीय अनन्त जीवन पर किस तरह का प्रभाव पड़ सकता है?

(1) धन और सम्पत्ति मसीही जीवन में परमेश्वर के वचन को दबा सकता है।

पढ़ें मरकुस 4:14,18-19। मरकुस 4:19 हमें सिखाता है कि धन का धोखा वचन को दबा सकता है जिससे कि प्रभु का वचन निष्फल रह जाता है। जिस व्यक्ति का हृदय पहले से धन व सम्पत्ति के प्रेम से घिरा होता है, वह कभी परमेश्वर के वचन से प्रभावित होने के लिए इच्छुक नहीं होगा।

(2) धन व सम्पत्ति के लोभ के कारण एक मसीही जन अपने जीवन की उच्च प्राथमिकता से हाथ धो सकता है।

पढ़ें मत्ती 6:24; लूका 12:13-21। जीवन की सर्वोच्च प्राथमिकता परमेश्वर की सेवा करना व उससे प्रेम करना है। किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। उसने सोचा कि वह अपनी उपज को सुरक्षित रखने के लिए बड़ी बड़ी बखारियां बनाएगा और फिर चैन से रहेगा। और उसने अपने प्राण से कहा, "कि प्राण तेर पास तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है;चैन कर, खा पी, सुख से रह।" परन्तु परमेश्वर ने उसे से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तू ने इकटठा किया है, वह किस का होगा?" ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह मनुष्य कितने ज्यादा दिन जीवित रहता है उनका अन्त तुरन्त आ जाएगा और तब जिन चीजों के लिए उन्होंने परिश्रम किया होगा वे सभी व्यर्थ ठहरेगीं। इस संसार में अपना जीवन व्यतीत करने के लिए सभी लोगों को पैसों की आवश्यकता होती है। लेकिन जब पैसा कमाना ही मनुष्य के जीवन का मकसद बन जाता है, तो वह परमेश्वर को प्रेम करने और उसकी सेवा करने का कोई प्रयास नहीं करता।

(3) धन और सम्पत्ति की वजह से मनुष्य अपने प्राणों को खो सकता है।

पढ़ें मरकुस 8:34-38; 10:21-27; लूका 16:19-31; 22:4-6; प्रेरितों के काम 5:1-11; 1 तीमुथियुस 6:10; याकूब 5:1-6। रूपयों और सम्पत्ति का प्रेम व्यक्ति के जीवन का सबसे बढ़ा खतरा बन सकता है।

- उस जवान व्यक्ति ने यीशु के पीछे आना छोड़ दिया, क्योंकि यीशु को प्रेम करने से अधिक उसने अपनी धन सम्पत्ति को प्रेम किया। और बिना यीशु के कोई भी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करके उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता(मरकुस 10:21-27)।
- दूसरा धनी जन लाज़र नामक एक गरीब पर दया करना नहीं चाहता था। उसकी मृत्यु उपरान्त, अपने स्वार्थ व कठोर हृदय के कारण वह नरक में गया, जिससे यह प्रकट होता है कि उसके पास न तो विश्वास था और न ही प्रेम(लूका 16:19-31; 1यूहन्ना 3:16-17)।
- यहूदा ने पैसों के लिए यीशु से विश्वासघात करना स्वीकार कर लिया। और बाद में उसने आत्महत्या कर ली। (लूका 22:4-6)।

- हनन्याह और सफीरा ने अपने आर्थिक सौदे को लेकर कलीसिया से झूठ बोला इसलिए वे तुरन्त मर गये(प्रेरितों. 5:1-11)।
- बहुत से धनी लोगों ने अपने लिए बहुत सी सम्पत्ति इकट्ठा की, विलासता और अपने आप को प्रसन्न करने वाला जीवन जिया, लेकिन उसी समय पर उन्होंने अपने कर्मचारियों की मज़दूरी नहीं दी। उन्होंने धन उपार्जन करने के लिए दूसरों का कत्ल तक कर दिया। याकूब कहता है कि ऐसे लोगों का जीवन अन्त में, उन्हें नरक में केवल मृत्यु प्राप्त होगी(याकूब 5:1-6)।
- रूपये का लोभ किसी भी जन को मसीही विश्वास से भटका सकता है(1 तीमुथियुस 6:10)।

इसीलिए यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, "तुम धन और परमेश्वर दोनों की सेवा नहीं कर सकते!" "यदि कोई जन संसार में सब कुछ कमाये और अन्त में अपना प्राण गवां दे तो उसे फिर क्या लाभ?" या मनुष्य अपने प्राणों के बदले में क्या दे सकता है?" अपने प्राणों को खो देने या गवां देने का अर्थ नरक में अपने अनन्त मृत्यु को प्राप्त करना। बहुत से लोग सोचते हैं कि सम्पत्ति या शक्ति या ससांर में कीर्ति को प्राप्त करने से उनका प्राण बच जाएगा। लेकिन यीशु मसीह सिखाते हैं कि इस संसार तथा आने वाले संसार में अपने प्राणों को बचाने का एकमात्र तरीका मसीह और उसके राज्य के लिए अपने आप का इनकार करना है!

3. बाइबल में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार।

परिचय दें। भ्रष्टाचार का अर्थ गलत तरीके से धन अर्जित करना या धन को दुष्ट कामों के लिए इस्तेमाल करना।

(1) बाइबल में उल्लेखित भ्रष्टाचार।

खोज और चर्चा करें। बाइबल में उल्लेखित भ्रष्टाचार के तरीके कौन से हैं? बाइबल के गद्यांश को पढ़ें।

ध्यान दें। लैव्यव्यवस्था 19:11-13 में लिखा है कि चोरी करना या लूटना भ्रष्टाचार है। भजन संहिता 37:21 में लिखा है कि धन या कोई दूसरी वस्तु उधार लेकर वापस न करना भ्रष्टाचार है। याकूब 5:4 में कहा गया हैं कि अपने अधीन काम करने वाले मजदूरों की मज़दूरी रोकना भ्रष्टाचार है। व्यवस्थाविवरण 25:13-15 में कहा गया है कि बेईमानी और छल करना, जैसे कि तौल में गड़बडी करना, भ्रष्टता है। नीतिवचन 17:8,22 में कहा गया है, कि घूस देना और लेना दोनों की भ्रष्टाचार है। नीतिवचन 28:8 में कहा गया है अनुचित ब्याज वसूलना भ्रष्टाचार है। "साहूकार" उच्च ब्याज दरों पर पैसे उधार देते हैं और उधार लेने वालों को आजीवनकाल तक उनकी गुलामी करने पर मजबूर करते हैं। सभोपदेशक 7:7 में कहा गया है, लूट खसोट करना भ्रष्टता है। जो लोग "सुरक्षा के तौर पर धन" मांगते हैं भ्रष्टाचारी हैं। बाइबल में पायी जाने वाली ये सारी स्पष्ट शिक्षाएं बताती हैं कि परमेश्वर इस प्रकार की बेईमानी और भ्रष्टाचार से नफरत करता है।

(2) भ्रष्टाचार और आधुनिक समाज।

खोजें और चर्चा करें। क्या आप समाज में अन्य किस्म के भ्रष्टाचार के बारे में जानते हैं? बाइबल के गद्याशों को पढ़ें।

ध्यान दें। नीतिवचन 11:2 और 16:8 में लिखा है कि *अधर्म से की गयी कमाई* भ्रष्ट है। अधर्म से कमाये गये धन के उदारहण, लौटरी टिकट का बेचना और जूआ खेलना है। लौटरी खेलना या सट्टा लगाना या जुआ खेलना *लालच* के तहत खेले जाते हैं और इसमें *किस्मत पर भरोसा* किया जाता है, जो बहुत से लोगों की *आदत* बन चुका है और जो परमेश्वर द्वारा दिये गये धन का *अच्छा इस्तेमाल नहीं* है। जुए के कारण लोग कर्जदार, कंगाल और कसीनों के मालिकों के गुलाम बन जाते हैं। इसके अलावा, 2 थिस्लुनिकियों 3:10 में सिखाया गया है कि लोगों को अपनी भोजन वस्तु को कमाने के लिए मेहनत और ईमानदारी से काम करना चाहिए। अवैध तरीके से औषधि बेचना और ऐसे धन का काले धन के रूप में इस्तेमाल करना भ्रष्टाचार है। झूठी रसीदें बनाना और उन्हें बेचना भ्रष्टाचार है। नकली नोट बना और झूठे क्रेडिट कार्ड बनाना भ्रष्टाचार है। आप अन्य किस प्रकार के भ्रष्टाचार के बारे में सोच सकते हैं?

4. समाज में घूस देने का लोगों के जीवन में असर।

(1) घूस लेना और देना।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल में घूस देने और लेने को किस नजरिये से देखा जाता है? गद्यांशं पढ़ें।

ध्यान दें। नीतिवचन 17:8,23 में कहा गया है कि घूस देना या *लेना* दोनों भ्रष्टाचार है। भजन संहिता 26:10 में कहा गया है कि घूस देने या लेने वालों के मन में दुष्ट युक्ति होती है। इससे कोई फर्क नहीं कि भ्रष्ट व्यापारी और भ्रष्ट सरकारी अधिकारी कहते हैं, लेकिन बाइबल कहती हैं कि जो कोई घूस को देता या लेता है, उनके मन में दुष्ट युक्ति होती है। ऐसे लोगों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। नीतिवचन 10:6 में कहा गया है कि सरकारी अधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए दिया गया छोटा या बड़ा तोहफा भ्रष्टाचार है।

मित्रता निभाने के लिए दिया परम्परागत उपहार घूस नहीं है। लेकिन किसी व्यापारिक सौदे को अपने पक्ष में करने की मनसा से दिया कोई बड़ा तोहफा देना या लेना भ्रष्टाचार है। हर एक कम्पनी ने प्रत्येक सौदे के दौरान लेने देन की जाने वाली धनराशि को सुनिश्चित कर देना चाहिए। लेने देन के दौरान किये जाने वाले भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कम्पनी के लेखाधिकारी के द्वारा हर एक उपहार या तोहफे का लेखा जोखा रखना चाहिए।

सरकारी विभाग द्वारा किसी सौदे में अपने पक्ष में निर्णय प्राप्त करने या न्यायालय में न्याय खरीदने की मनसा से दिया गया उपहार भ्रष्टाचार होता है।

मसीहियों को यह जानकारी होनी चाहिए कि किसी भी तरीसे से घूस दिया या लिया जाना भ्रष्टाचार है। इसलिए मसीहियों को कभी घूस लेना या देना नहीं चाहिए।

(2) घूस देने और लेने के दुष्परिणाम।

खोजें और चर्चा करें। घूस देने और लेने वाले लोगों से निर्मित समाज के दुष्परिणाम कौन कौन से हैं? बाइबल गद्यांशों को पढ़ें।

ध्यान दें। बाइबल सभी भ्रष्ट लोगों को चेतावनी देती है कि वे सभी बहुत बढ़े खतरे में हैं।
व्यवस्थाविवरण 16:18–19 हमें बताता है कि किसी कानूनी मामले का समझौता करने या विरोधी को हटाने के लिए पैसे देना भ्रष्टाचार है। यदि कोई न्यायी पारदर्शिता के साथ न्यान नहीं करता है तो वह भ्रष्ट न्यायी है। वह कानून व्यवस्था को बनाये रखने की बजाय उसका उल्लंघन करता और न्याय बिगाड़ता है। वह दोषी

को दण्ड देने की बजाय, वह दोषी का साथ देता है और उसे उल्टा गलत तरीके से काम करने की जानकारी प्रदान करता है। वह निर्दोष को सही जानकारियों से अवगत कराने की बजाय, वह उनके विरोधियों का पक्ष लेता है और उन्हें न्याय नहीं दिलाता। घूस भ्रष्ट न्यायी की आंखें मूंद देती और उसके न्याय को गुमराह कर देती है जिससे वे न तो सहीं चीजों को देख पाते हैं और न ही बोल पाते हैं। भ्रष्ट न्यायी का समाज अन्त में नाश हो जाएगा।

व्यवस्थाविवरण 27:19,25 और यशायाह 5:22-23 सिखाता है कि भ्रष्ट न्यायी व राजनेताओं और व्यापारियों वाला समाज *परमेश्वर की ओर से शापित है।*

यशायाह 1:23-25 और मीका 3:9-12 एक भ्रष्ट समाज के लक्षणों के बारे में बताता है। यशायाह 1:23-25,28 और मीका 3:9-11 में एक भ्रष्ट समाज की तस्वीर को दर्शाया गया है। "तेरे हाकिम हठीले और चोरों से मिले हैं। वे सब के सब घूस खाने वाले और भेंट के लालची हैं, वे अनाथ का न्याय नहीं करते, और न विधवा का मुकद्दमा अपने पास आने देते है।" क्योंकि गरीब जन न्यायी को पैसे या घूस नहीं दे सकता है! परमेश्वर चेतावनी देते हैं कि वह इस तरह के समाज अर्थात लोगों के प्रति अपना हाथ बढ़ायेगें, वह खुद उनके खिलाफ मुकद्दमा लड़ेंगें और अन्त में भ्रष्ट जन को नाश करेगें! परमश्वेर यह कार्य उसकी पीढ़ी या अगली पीढ़ी में करेगें।

सभोपदेशक 7:7 में लिखा है कि जो व्यक्ति धूस देता या लेता है वह नैतिक तौर पर भ्रष्ट और अधर्मी बन जाता है। वह स्वयं अपने चरित्र को नाश कर देता है! नीतिवचन 15:7 में लिखा है कि अपराधियों का समर्थन करनेवाला तथा निर्दोष जन के दु:खों के बढ़ाने वाला और घूस देने और लेने वाला व्यक्ति अपने परिवार के लिए ही समस्याओं को खड़ा करता है। यदि वह पकड़ा जाए और जेल में डाला जाए तो वह अपने परिवार का भविष्य में पालन पोषण नहीं कर सकता। वह अपने परिवार के लिए दु:ख को कमाता है और परिवार के लोगे उसका आदर नहीं करेगें।

मीका 3:9-12 में अगुवों के बारे में लिखा गया है: "वे न्याय से घृणा करते और सीधी बातों को टेढ़ी -मेढ़ी करते हैं। वे हत्या व दुष्टता करके शहर को बनाते हैं। उनके प्रधान घूस ले लेकर विचार करते और याजक दाम ले लेकर व्यवस्था देते हैं और भविष्यद्वक्ता रूपये के लिए भावी कहते हैं, वे यह कह कहकर यहोवा पर भरोसा रखते हैं, यहोवा हमारे बीच में है, इसलिए कोई विपत्ति हम पर न आएगी। इसलिए तुम्हारे कारण सिय्योन जोतकर खेत बनाया जाएगा, और यरूशलेम डीह डीह हो जाएगा, और जिस पर्वत पर भवन बना है, वह वन के ऊंचे स्थान सा हो जाएगा।

लेकिन, व्यवस्थाविवरण 27:25, अय्यूब 15:34 और मत्ती 18:7-9 सिखाता है कि घूस देने व लेने वाले जन का सबसे बुरा नतीजा यह है कि परमेश्वर उसे शाप देगा, परमेश्वर ही उनके परिवार पर सब प्रकार की तकलीफें डालेगा और उनकी सम्पत्ति उजाड़ हो जाएगी और अन्त में उन्हें नरक की आग में इसलिए डाल दिया जाएगा क्योंकि उन्होंने दूसरों को पाप करने के लिए मज़बूर किया।

ख. धन का उचित रीति से प्रबन्ध करने के लिए बाइबल आधारित निर्देश

1. उचित तरीके से धन कमाना।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल हमें धन कमाने के बारे में क्या शिक्षा देती है? बाइबल से गद्यांश को पढ़ें।

ध्यान दें। 2थिस्लुनिकियों 3:6-15 में मसीहियों को अपने लिए धन कमाने के लिए कहा गया है। मसीहियों को सुस्त और दूसरों के काम में टांग अड़ाने वाले लोगों के साथ संगति नहीं करनी चाहिए। नीतिवचन 10:4-5 में लिखा है कि मसीहियों को सुस्त नहीं वरन प्रयत्नशील होना चाहिए। नीतिवचन 23:4-5 में सिखाते हैं कि मसीहियों को बहुत अधिक समय तक अतिरिक्त काम भी नहीं करना चाहिए। "धनी होने के लिए परिश्रम न करना; अपनी समझ का भरोसा छोड़ना।" उसे इतना ज्यादा अतिरिक्त काम नहीं करना चाहिए कि उसके पास बाकि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए समय ही न बचे, जैसे कि परिवार के साथ समय बिताना या परमेश्वर की सेवा करना। मसीहियों को यह कभी कहना चाहिए, "यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ्य और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई है"(व्यवस्थाविवरण 8:17-18)। पौलुस कहता है,"तेरे पास क्या है जिसे तू ने (दूसरे से)नहीं पाया है।" (1कुरिन्थियों 4:7)? उन्हें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि यह परमेश्वर हैं जो उन्हें धन उपार्जित करने के लिए योग्यता प्रदान करता है।

2. धन की उचित रीति से बचत करना।

खोजे और चर्चा करें। बाइबल धन की बचत करने के बारे में क्या शिक्षा प्रदान करती है? बाइबल के गद्यांश को पढ़ें।

ध्यान दें। यदि एक मसीही जन अपने बच्चे की शिक्षा के लिए जैसी किसी अच्छी भविष्य की योजना के लिए, या किसी भले काम हेतू दान देने के लिए धन की बचत करना चाहता है, तो नीतिवचन 13:11 में लिखा है, "परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता है, उसकी बढ़ौतरी होती है।" धीरे धीरे बचन करने पर अन्त में उसके पास अपने भविष्य की योजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन होगा।

मत्ती 25:27 से हमें शिक्षा मिलती है कि मसीही जन ब्याज कमाने के लिए बैंक में एक बचत खाता खोल सकता है। लेकिन, मत्ती 6:19-24 के अनुसार, धन की बचत करने का सबसे अच्छा तरीका परमेश्वर के राज्य में निवेश करना है! यीशु ने कहा, "धरती पर अपने लिए धन इकट्ठा न करो;जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते हैं और न चुराते हैं।" स्वर्ग में अपना धन इकट्ठा करने का व्यवहारिक तरीका परमेश्वर के राज्य की बढ़ौतरी में खर्च करना है।

3. सही तरीके से धन खर्च करना।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल धन खर्च करने के विषय में क्या शिक्षा देती है? बाइबल में से गद्यांश को पढ़ें।

ध्यान दें। नीतिवचन 21:5 हमें बताता है कि मसीहियों को धन खर्च करने से पहले क्या करना चाहिए। इसमें लिखा है "कामाकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है। मसीहियों को अपनी कमाई और परमेश्वर के उद्देश्य के आधार पर अपना धन खर्च करना चाहिए (नीतिवचन 16:2-3)।

निम्नलिखित व्यवहारिक सुझाव एक मसीही की खर्च करते समय योजना बनाने में सहायता करेगें।

- अपने जीवन साथी के साथ मिलकर एक दल के रूप में काम और धन के *बजट* के लिए योजना तैयार करें। आप चाहें तो बच्चों को भी इस काम में साथ ले सकते हैं। इसके द्वारा आपके बच्चे भी

धन सम्बन्धी योजनाओं को अच्छी तरह से तैयार करना सीख जाते हैं। अपनी कलीसिया में भी आप प्राचीनों की परिषद या समीति के लोगों के साथ मिलकर धन सम्बन्धी योजना को बनायें।

- अपनी जरूरतों की एक सूची तैयार करें, इस तरह से आप अपने पैसों को केवल जरूरी चीजों पर ही खर्च करते हैं।
- केवल उसी पैसों को खर्च करें जो परमेश्वर ने आपके हाथों में सौंपे हैं। उन पैसों को खर्च न करें जो आपके पास किसी योजना को चलाने के लिए नहीं है। कभी कर्ज न लें।
- यदि आप अपने धन को बचाना चाहते हैं, उन कामों को करना बन्द कर दें जो वास्तव में जरूरी नहीं हैं।
- खर्च करने के लिए यर्थाथ लक्ष्यों का चयन करें।
- सारे खर्चे का हिसाब जरूर लिखें। हर लेन देन की रसीद बनाये और हर महीने का आर्थिक लेखा रखें।
- बुद्धिमानी से खरीदारी करें, खरीदने पहले बाजार में उसके बारे में ठीक तरीके से जानकारी हासिल कर लें। क्या जो सामान आप खरीद रहे हैं वह वैसा ही है जैसा उसके बारे में दावा किया जाता है? क्या उस उत्पादन को खरीदने से उसकी किमत वसूल हो पाएगी? क्या आप अपनी जरूरत से बढ़कर खरीद रहे हो? क्या आपको सामान वास्तव में उचित दामों में लि रहा है? नीतिवचन 1:3 हमें सिखाता है कि जो कुछ एक मसीही जन करे, वह सही, अच्छा और ठीक होना चाहिए।

4. उचित रीति से पैसे उधार लेना।

(1) उधार लेना।

रोमियों 13:8 में लिखा है, "आपस में प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी न व्यवस्था पूरी की है।" इस वास्तविक तो " किसी मनुष्य से कोई कर्ज न लेना ही हुआ।" लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोग किसी से पैसे उधार नहीं ले सकते, या वे जरूरत पढ़ने पर कर्ज नहीं सकते(निर्गमन 22:15; भजन 37: 26; मत्ती 5:42; लूका 6:35)। लेकिन यह वचन कुछ मसीहियों द्वारा किश्ते न भरने तथा कर्ज़ उतारते समय पर की जाने वाली लापरवाही की निन्दा करता है(भजन 37:21)। इस अनुच्छेद में ज़्यादा ज़ोर आर्थिक कर्ज़ पर नहीं, अपने पड़ोसी को प्रेम करने की ज़िम्मेदारी पर डाला जा रहा है।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल धन कर्ज़ पर लेने के बारे में क्या कहती है?
ध्यान दें। बाइबल कर्ज लेने के विरोध में चेतावनी देती है: "धनी, निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है, और उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है(नीतिवचन 22:7)!" इसलिए, *सामान्य तौर पर,* मसीहियों का पैसे उधार नहीं लेने चाहिए। नहीं तो वे उधार देनेवाले के दास बन जाएगें। लेकिन बाइबल निश्चित तौर पर किसी की सहायता के लिए धन उधार देने, व्यापारिक तौर पर कर्ज देने, वायदा करके पैसे देने और कलीसिया में पैसे उधार देने की बात करती है।

(2) धर्मार्थ ऋण।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल धर्मार्थ या सहायता के तौर पर दिये जाने कर्ज के बारे में क्या कहती है।
ध्यान दें। इस्राएल में सारे कर्ज व्यापारिक नहीं वरन सहायतार्थ थे(निर्गमन 22:25-27; लैवव्यवस्था 25:35-37; व्यवस्थाविवरण 15:7-11; 23:19-20)। ये कर्ज किसी व्यवसाय को स्थापित करने या काम को

बढ़ाने, परन्तु किसी किसान का या गरीब व्यक्ति की कंगाल अवस्था से निकलने में सहायता करने के लिए दिया जाता था। बाइबल संगी इस्राएली से उनके बुरे वक्त में ब्याज लेकर लाभ कमाने से मना करती है। *सूदखोरी* शब्द का अर्थाक आधुनिक जगत में लिये जाने वाले *ब्याज* से नहीं है। पुराने नियम में शिकायत यह नहीं थी कि वे अधिक ब्याजदर पर ब्याज वसूल रहे थे, लेकिन शिकायत उधार दिये गये धन ब्याज लेने की थी। मत्ती 5:42 में सिखाया गया है कि यदि कोई तुमसे सहायता मांगें तो उसे देने से मना न करना।

(3) व्यापारिक ऋण।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल व्यापारिक ऋण के बारे में क्या कहती है? बाइबल गद्यांश को पढ़ें।

ध्यान दें। बदलती हुई अर्थव्यवस्था में यीशु मसीह ने अधिक आय कमाने के लिए बैक में धन निवेश करने की अनुमति प्रदान की है(मत्ती 25:27; लूका 19:23)। इसलिए, बैंक लोगों को ऋण देकर उनके ब्याज से धन कमा सकते हैं।

लेकिन लूका 6:30-36 में यीशु मसीह निजी तौर पर किसी के प्रति किये जाने वाले काम पर किसी भी प्रकार का शुल्क या उनसे कुछ बदला पाने की चाह के लिए मना करते हैं। "यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखते हैं। और यदि तुम अपने भलाई करने वालों ही के साथ भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं। और यदि तुम अपने भलाई करनेवालों ही के साथ भलाई करते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई ? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करे हैं। और यदि तुम उसे उधार दो जिन से फिर पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारी क्या बढ़ाई? क्योंकि पापी पापियों को उधार देते हैं, कि उतना ही फिर पाएं। वरन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो: और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है।

हम जिस बात पर गम्भीरता से ध्यान दे सकते हैं वह यह है कि *गरीबों को अपना कोई लघु उद्योग प्रारम्भ करने के लिए नि:शुल्क ब्याज दर पर ऋण प्रदान करें।* वे उस ऋण को वापस कर सकते हैं और उसी राशि को दूसरे किसी गरीब जन के लघु उद्योग को प्रारम्भ करने के लिए पुन: दिया जा सकता है। होने दे कि लोग परमेश्वर द्वारा दिये गये कौशल का इस्तेमाल कर सकें। होने दें कि वे अपना निजी लघु उद्योग प्रारम्भ कर सकें। समय पर ऋण की किश्ते चुकाने पर उन्हें प्रतिष्ठा ओर आत्म-सम्मान प्राप्त होता है।

(4) पगड़ी और जमानत।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल पगड़ी और जमानत के बारे में क्या कहती है? बाइबल गद्यांश को पढ़ें।

ध्यान दें। पुराने नियम के समय में, एक छोटे अस्थायी लोन के लिए जमानत ने किसी निजी वस्तु को प्रतिभूति के तौर पर,जीमन जायदात को गिरवी रखना या किसी जमानती की जमानत का रूप ले लिया। लोन वापस न किये जाने की दशा में उसकी जमानत या गिरवी रखी राशि जब्त हो जाती थी(व्यवस्थाविवरण 24:10-13; नहेम्याह 5:3; अय्यूब 24:3; नीतिवचन 6:1-5; 22:26-27)। जहां पर जब्त करने के लिए कोई सम्पत्ति नहीं होती थी, उस दशा में उधार लेने वाले या जमानती को गुलामी करने के लिए बेच दिया जाता था(निर्गमन 22:3; 2 राजा 4:1; आमोस 2:6-8; 8:6)। इसलिए नीतिवचन 6:1-5 में हमें सिखाया गया है कि मसीहियों को किसी का उत्तरदायी होने के लिए मना किया गया है! लेकिन पुराने नियम की व्यवस्था इस परम्परा के दर्द को इस्राएल में कुछ कम कर देती है। कुछ *नियमों के तहत* (लैव्यवस्था 25:39-43; व्यवस्थाविवरण 15:1-11), इस्राएल में सारे कर्जों को सातवें वर्ष में रद्द कर दिया जाता था!

(5) मण्डली से पैसे मांगना।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल मण्डली से पैसे उधार लेने के विषय में क्या कहती है?

ध्यान दें। पैसे उधार लेना हमेशा गलत नहीं है। मत्ती 5:42 में, यीशु शिक्षा देते हैं,"जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे, और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उसे से मुंह न मोड़।" मसीहियों के बीच में पैसे उधार मांगना एक अति संवेदनशील मसला है। सामान्यत, एक मसीही,एक जरूरत मन्द मसीही जिसे अपने गरीबी के दौर से बाहर आने के लिए पैसों की जरूरत है, मण्डली के सदस्यों के पास जाकर लोगों से व्यक्तिगत तौर पर पैसे उधार नहीं मांगने चाहिए, वरन अपनी जरूरत के बारे में मण्डली के प्राचीन को जाकर बताना चाहिए। प्राचीनों को इस बात का फैसला करना चाहिए कि क्या उसे जरूरत है, और अगर यह सत्य है तो किस प्रकार से यह सहायता प्रदान की जानी चाहिए। मण्डली ने धर्मार्थ दिये गये इस लोन पर किसी तरह का ब्याज नहीं वसूलना चाहिए। प्राचीन अपने निर्णयों के पालन करने का काम डीकनों के हाथों में सौंप सकते हैं।

लेकिन, एक मसीही, जन को अगर अपने निजी व्यापार को बनाने या बढ़ाने के लिए धन की आवश्यकता है, तो वह मण्डली में से किसी जन से न मांगकर, बैंक से ले। बैंकि हमेशा लोग पर ब्याज लगाते हैं और उसका सारा नियन्त्रण सरकार के हाथों में होता है। बहुत सी ऐसी मसीही सस्थाएं हैं जो एक तरफ तो शिक्षा, स्वास्थ्य की देखभाल करने और घर बनाने के लिए और दूसरी ओर कृषि क्षेत्र में,व्यापार जगतमें और गरीब देशों में उद्योग क्षेत्रों में आर्थिक सहायता उपलब्ध कराती हैं(2 कुरिन्थियों अध्याय 8 व 9)।

मसीहियों को कभी भी 'साहूकारों' से पैसे उधार नहीं लेने चाहिए, क्योंकि अवैध रूप से काम करते हैं, वे बढ़ चढ़कर ब्याज वसूल करते हैं और जो लोग लोन वापस नहीं कर पाते उनके साथ बुरी तरह मार पिटाई करते हैं। और अन्ततः लोग इन साहूकारों व उधार देने वालों के दास बन जाते हैं और जिन्दगी भर तक उन्हीं साहूकारों को अमीर बनाने में लगा देते हैं।

5. आर्थिक बन्धुवाई से स्वतन्त्र रहना।

खोजें और चर्चा करें। एक मसीही जन किस प्रकार से आर्थिक बन्धुवाई से स्वतन्त्र हो सकता है? बाइबल गद्यांश पढ़ें।

ध्यान दें। निम्नलिखित सिद्धान्त एक मसीही जन को आर्थिक बन्धुवाई से स्वतन्त्र होने में सहायता करते हैं।

- आलसी न बनें, अपने दैनिक कामों को करने में प्रयत्नशील रहें(नीतिवचन 24:30-34)।
- यदि आपको कपड़ों और भोजन की कमी हो तो अपनी सारी बुनियादी जरूरतों के लिए परमेश्वर पर विश्वास करें(मत्ती 6:25-34)।
- आर्थिक क्षेत्र में गैर जिम्मेदार रवैया अपना कर परमेश्वर का किसी प्रकार की परीक्षा या दुविधा में न डालें(लूका 15:13)।
- दूसरों से न तो धन उधार ले और न ही दूसरों को उधार दें(नीतिवचन 22:7)।
- कर्ज से दूर रहें, खास तौर पर अधिक निन्दा या विरोध करने वाले तत्वों से(रोमियों 13:8)।
- अपने उन खातों को बन्द करें जिन पर आपको सेवा शुल्क अदा करना पड़ता है और क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करने की बजाय नकद पैसों का इस्तेमाल करें(जकर्याह 10:2 में दिखावटी वायदों के बारे में बोला गया है)।
- किसी भी जन के लिए जमानती न बने(अर्थात किसी के लोन दिलाने में जिम्मेदारी न लें)(नीतिवचन 11:15)।

- अपने सामान के खराब होने से पहले पहले उसका इस्तेमाल करें। और अपनी सम्पत्ति को अपने मसीही भाईयों के साथ बांट लें।
- इस्तेमाल की गयी चीजों को खरीद लें कई बार हमें बहुत अच्छा सामान बहुत कम पैसों में मिल जाता है।
- उन चीजों को खरीदना बन्द करें जिन्हें आप केवल अपनी शान या शौक के लिए खरीदना चाहते हैं लेकिन उनकी कोई जरूरत नहीं है।

ग. मसीही जीवन शैली का चुनाव करना।

1. संसार की विभिन्न जीवन शैलियां जिससे परमेश्वर के नाम का अनादर होता है।

इस संसार में बहुत सी जीवन शैलियां पायी जाती हैं। अमीर और गरीब दोनों को ही अपनी अपनी जीवन शैली चुनने की जिम्मेदारी होती है।

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार की जीवन शैली से परमेश्वर का अनादर होता है? बाइबल के गद्यांश को पढ़ें।

परमेश्वर निम्न चीजों की निन्दा करता है:

(1) एक व्यर्थ जीवन शैली(यहेजकेल 34:17-19; मत्ती 7:6)!

(2) सासांरिक अभिलाषाओं से भरा हुआ जीवन(नीतिवचन 21:17; 23:20-21)!

(3) बेईमान जीवन शैली(लैवव्यवस्था 19:11-13,35,-36)!

(4) एक लालची जीवन शैली(लूका 12:15; याकूब 5:1:6)!

2. मसीही जीवन शैली में जरूरतों और धन सम्पत्ति के प्रति जिम्मेदारी का स्वभाव होता है।

पढ़ें फिलिप्पियों 4:11-12; 1 कुरिन्थियों 4:7; 1 तीमुथियुस 6:8,17-18।

ध्यान दें। जरूरतों और धन सम्पत्ति के प्रति मसीहीयों ने किस प्रकार का रवैय्या अपनाना चाहिए?

(1) सन्तुष्टि।

वास्तविक जरूरतों के बारे में कहें तो, मसीहियों की बुनियादी जरूरतें पूरी हो जा रही हैं तों उन्हें उसी में *सन्तुष्ट होना चाहिए।*

1 तीमुथियुस 6:8 हमें वास्तव में सिखाता है कि "यदि हमारे पास खाने और पहिनने (ग्रीक: स्कीपाज़्मा)को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए। परिधान या वस्त्र हमारे जीवन में पहिनने अर्थात *सुरक्षा* के लिए काम आते है। यह मुख्यत: वस्त्र को दर्शाता है लेकिन यह साथ ही साथ शरणस्थान या आड़ को भी प्रगट करता है।

(2) मनोरंजन।

सब प्रकार की सम्पत्ति और वस्तुओं के सन्दर्भ में, मसीहियों को यह याद रखना चाहिए कि मनोरंजन करने के लिए जितनी भी चीजों की हमें जरूरत होती है उन सब का *इन्तज़ाम केवल परमेश्वर* करता है। और मसीही लोग केवल उन ही चीजों को आनन्द उठा सकते हैं जो उनके पास होती हैं(1 तीमुथियुस 6:17)!

(3) साझा करना।

सम्पत्ति के क्षेत्र में, मसीहियों को भलाई करने, उदारवादी होने और अपनी चीजों को साझा करने का आदेश दिया गया है(1 तीमुथियुस 6:18)!

3. मसीही जीवन शैली में सम्पत्ति का जिम्मेदारी के साथ प्रबन्ध करना भी शामिल होता है।

पढ़ें लूका 12:42-48।
खोजें और चर्चा करें। एक मसीही जन को उसे सौंपी गयी सम्पत्ति का प्रबन्ध करना चाहिए?
ध्यान दें।

(1) गरीब।

करोंड़ों लो आज गरीब हैं और संसार भर में हजारों हजार लोग भूख से मर जाते हैं ।
मसीही लोग इन लोगों को नहीं भूल सकते! नीतिवचन 19:17 कहता है, "जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा।" और नीतिवचन 21:13 में लिखा है, "जो कंगाल की दोहाई पर कान न दे, वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी।"

(2) धारक।

मसीही के पास जो कोई चीजें होती है, वह उसे परमेश्वर से प्राप्त हुआ है(1कुरिन्थियों 4:7) और परमेश्वर ने उस पर अपनी चीजों को देकर भरोसा किया है(लूका 12:42-48)!

शिक्षा दें। इन तथ्यों के आधार पर मसीहियों निम्नलिखित काम करना चाहिए:

(3) बजट बनाएं।

मसीहियों को अपने भोजन, वस्त्र, घर, यात्रा, उपहार आदि पर खर्च करने के लिए एक निर्धारित राशि तय कर लेनी चाहिए। इन खर्चों को लिख लें तथा वे अपनी आय के हिसाब से मेल खाता हुआ बजट बनाएं।

(4) किसी भी चीज की अति से बचना चाहिए।

मसीहियों को निम्नलिखित चीजों व बातों के बीच में फरक करना आना चाहिए:

- कौन सी चीज़ आवश्यकता है और कौन सी चीज विलासता।
- क्या रचनात्मक विकास है और केवल अपने को बढ़ा दिखाने के लिए दिखावा है।
- क्या शालीनता है और क्या व्यर्थता।
- किसी विशेष उपलक्ष्य में किये जाने वाले खर्च और रोजमर्रा के बहुतायत के जीवन में क्या अन्तर होता है।
- किसके द्वारा परमेश्वर की सेवा होती है और किसके द्वारा मनुष्य की गुलामी।

(5) मसीहियों को अमीर समाज का अनुसरण नहीं करना चाहिए।

मसीहियों को अमीर लोगों या समाज का अपना आदर्श बनाकर उनका अनुसरण नहीं करना चाहिए वरन उन्हें परमेश्वर के राज्य और उसके मूल्यों को देखना और उसे अपना आदर्श बनाना चाहिए।

(6) सम्पत्ति और वस्तुओं का बेहतर इस्तेमाल करें।

मसीहियों को असंयम और अपसंचय का विरोधा करना चाहिए, चीजों की बर्बादी नहीं करनी चाहिए और पर्यावरण को दूषित नहीं करना चाहिए(उत्पत्ति 1:28)। उन्हें अपने सामान की अच्छी देखभाल करनी चाहिए और उसे लम्बे समय तक अच्छी दशा में रखना चाहिए। मसीहियों को अपने सामान का बेहतर इस्तेमाल करना चाहिए। उदारहण के तौर पर, उन्हें अपने घर को मसीही गतिविधियों के लिए खोलना चाहिए, अपने पुराने कपड़े गरीबों को दे देने चाहिए, अपनी किताबों को दूसरे पाठकों को दे देना चाहिए, इत्यादि।

(7) आर्थिक लेखा रखें।

मसीहियों को अपने खर्चे का लेखा रखकर अपने खर्चे का मूल्यांकन करना चाहिए और देखना चाहिए कि वे कैसे अपने जीवन को कम पैसों में चला सकते और ज्यादा दान या सहायता करने के लिए दे सकते हैं।

4. मसीही जीवन में परिवार के जरूरतमन्द सदस्यों की देखभाल करने की जिम्मेदारी शामिल होती है।

खोजें और चर्चा करें। मसीही जन को किस प्रकार अपने परिवार के जरूरतमन्द सदस्यों की देखभाल करनी चाहिए?
ध्यान दें।

(1) पत्नी।

पढ़ें इफिसियों 5:28-29। एक मसीही की सबसे पहली जिम्मेदारी यह है कि वह अपनी पत्नी की वास्तविक जरूरतों को पूरा करे।

(2) बच्चें।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 12:14-15। मसीही जन की दूसरी जिम्मेदारी यह है कि वह अपने बच्चों की देखभाल करें।

(3) माता-पिता।

पढ़ें 1 तीमुथियुस 5:4,8। एक मसीही जन की तीसरी जिम्मेदारी अपने परिवार के अन्य जनों जैसे,माता पिता, सास-ससुर, दादा-दादी व परिवार के अन्य अविवाहित जनों की देखभाल करना है। लेकिन अगर उनके परिवार के लोगों के पास अपना जीवन यापन करने के लिए पर्याप्त धन है तो फिर मसीही जन उन्हें विलासता का जीवन(उदाहरण के लिए, दुनिया की सैर पर जाना) प्रदान करने के लिए आर्थिक सहायता देने को बाध्य नहीं है। मसीहियों को परमेश्वर द्वारा दिये जाने वाले धन का अच्छा रखरखाव करने वाला होना चाहिए!

(4) भाई और बहनें।

पढ़ें 1यूहन्ना 3:17-18 को पढ़ें। मसीही जन की चौथी जिम्मेदारी अन्य मसीहियों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करना है।

5. मसीही जीवन शैली में पैसे देने में जिम्मेदार होना शामिल है।

खोजें और चर्चा करें। मसीहियों को अपने धन के द्वारा किसकी सहायता करनी चाहिए?
ध्यान दें।

(1) दशमांश।

पुराने नियम के समय में परमेश्वर की लोगों(यहूदियों) को मन्दिर की सेवा करने व यरूशलेम के कार्यालय के कामों को पूरा करने के लिए 'दशमांश' दिया करते थे(मलाकी 3:6-12)। दशमांश मसीहियों पर लागू नहीं होता! मैनुएल 4, परिशिष्ट 16 में देखें "दशमांश देना"। दशंमाश पुराने नियम के आनुष्ठानिक नियम में से एक है जिसको मन्दिर की सेवा और उसके दासों की सेवा के लिए बनाया गया था जिसके परिणाम

स्वरूप परमेश्वर इस्राएल के लोगों को आशीष देते थे(मलाकी 3:6-12)। आनुष्ठानिक नियम पूरा कर दिया गया(मत्ती 5:17), रद्द किया गया(कुलुस्सियों 2:14) और निराकरण(नष्ट)किया गया है(इफिसियों 2:14-15)। दूसरे आनुष्ठानिक विधियों के समान(खतना, पशुबलि, शुद्ध भोजन खाना, इत्यादि) दशमांश देना नये नियम में पुन: प्रारम्भ नहीं होगा! नये नियम में लूका 6:38 और 2कुरिन्थियों अध्याय 8 और 9 के आधार पर देना बिल्कुल अलग है और इसे पुराने नियम से बिल्कुल अलग वजह के लिए दिया जाता है। नये नियम में दशंमाश द्वारा निम्नलिखित चीज़ों की सहायता की जाती है:

(2) निर्देशक या शिक्षक।

पढ़ें गलातियों 6:6। मसीहियों को अपनी सभी भली वस्तुओं में अपने सिखाने वाले को भागी करना चाहिए। कई शिक्षक नि:शुल्क शिक्षा देना पसन्द करते हैं, जिससे कि उनके चेले भी उनका अनुसरण करके भविष्य में अपने चेलों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान कर सकें। "सेतं मेंत तुम्हें मिला है इसलिए तुम भी सेतं मेंत दे दो"(मत्ती 10:8)।"देना लेने से भला है"(प्रेरितों 20:35)

(3) प्रचारकों की।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 9:14। मसीहियों को सुसमाचार प्रचार करने वाले लोगों की सहायता करनी चाहिए। एक मसीही को इस बात का निर्णय लेना पड़ता है कि वह किसी आर्थिक रूप में किसी एक मंहगी विदेशी सेवाकाई के साथ खड़ा होगा या फिर सौ स्वेदशी कार्यकर्ताओं के साथ में।

(4) प्राचीनों की।

पढ़ें 1 तीमुथियुस 5:17। मसीहियों को अपनी मण्डली के प्राचीनों की मदद करनी चाहिए जो उनके काम बहुत अच्छे से करते हैं। एक मसीही को निर्णय लेना पड़ सकता है कि वह अपनी कलीसिया को दी जाने वाली आर्थिक सहायता को रोक दे, खास तौर पर यदि कलीसिया उस पैसे का इस्तेमाल या बाइबल आधारित तरीकों से इस्तेमाल नहीं कर रही है।

(5) अपनी मण्डली में पाये जाने वाले भाई व बहनों की।

पढ़ें याकूब 2:15-17; 1यूहन्ना 3:17-18। मसीहियों को अपनी ही कलीसिया के उन जरूरतमन्द भाई या बहनों की मदद करनी चाहिए जिनके पास खाने के लिए भोजन और पहनने के लिए वस्त्र नहीं है। यह काम कलीसिया के ही डीकनों के द्वारा करना चाहिए जिन्हें गरीबों की जरूरतों के बारे में अच्छे से जानकारी हो ताकि वे जल्द ही अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

(6) दूसरी कलीसिया में पाये जाने वाले भाई व बहनों की।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 8:13-15। एक मण्डली को अपनी बहुतायत में से देश के दूसरे राज्यों में या संसार के अन्य किसी देश में रहने वाले जरूरत मन्द मण्डलियों की सहायता करने के लिए सहयोग करना चाहिए। मसीहियों को भली प्रकार से अन्य मण्डलियों की जरूरतों के बारे में पता होना चाहिए और उन्हें इस बात की भी जांच करनी चाहिए कि उनकी सहायता वास्तव में सही स्थान में पहुंच भी रही है या नहीं।

(7) गरीबों की।

पढ़ें नीतिवचन 19:17; 21:13। मसीहियों को इन्सानियत के नाते भी गरीबों पर दया करने वाला होना चाहिए, चाहे वे मसीही हो या न हों। अधर्म की कमाई से (अधर्म की कमाई ,वह कमाई है जिससे इस संसार में बहुत से गलत काम हो रहे हैं।)अपने लिए दोस्त बना लें। (लूका 16:9)। इसका मतलब किसी को अपने धर्म में लाने के लिए खरीदना नहीं है जैसा कि दूसरे धर्म के लोग लोगों को अपना धर्म बदलने के एवज में

टेलीविजन जैसे सामान को देकर करते हैं। इसके बजाय दया, अनुग्रह और प्रेम प्रगट करें जिससे लोग अपनी इच्छा से परमेश्वर की ओर खिचें चले आएंगें। लेकिन बाइबल हमें यह नहीं बताती है कि हर एक मसीही जन को सबको ये छः लक्ष्य देने चाहिए। बाइबल हमें यह भी नहीं बताती है कि लोगों को विलासता में जीवन व्यतीत करने के लिए भी पैसे नही मिलने चाहिए।

6. मसीही जीवन शैली में त्याग शामिल होता है।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह कुछ मसीहियों से किस प्रकार के त्याग की अपेक्षा करते हैं?
ध्यान दें।
यीशु ने बहुत से अनुयायियों को स्वेच्छा से गरीबी का जीवन व्यतीत करने के लिए बुलाया है। उदारहण के लिए,

(1) स्वेच्छा से गरीबी।

पढ़ें मरकुस 10: 21 । यीशु मसीह ने एक धनी व्यक्ति से उसके पीछे होने के लिए पहले अपना सब कुछ बेच देने के लिए कहा, लेकिन उसने मना कर दिया। पतरस ने कहा कि दूसरे चेलों ने तो यीशु का अनुसरण करने के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया है।

(2) अनाथ।

पढ़ें मत्ती 8:20; 1 कुरिन्थियों 4:11। ज्यादातर स्वयं यीशु मसीह के पास सोने के लिए स्थान नहीं हुआ करता था। प्रेरितों की दशा भी कई बार अनाथों की जैसी थी।

(3) बुनियादी जरूरतों का अभाव।

पढ़ें फिलिप्पियों 4:11-12। पौलुस के पास कभी भोजन जैसी बुनियादी वस्तु नहीं हुआ करती थी।

(4) त्यागपूर्ण भेंट।

पढ़ें 2कुरिन्थियों 8:1-12; 9:6-15। त्यागपूर्ण भावना से देनें वालों में मकिदूनिया की मण्डली एक आदर्श थी। हालांकि वे खुद बहुत गरीब थे,लेकिन उन्होंने पौलुस से विनती की कि वह उन्हें अपने से भी गरीब मसीहियों की मदद करने का अवसर प्रदान करें। मसीह ने उन्हें किसी प्रकार का त्याग करने या बलिदान चढ़ाने के लिए नहीं बुलाया था लेकिन उन्हें स्वेच्छा और पूरे मन से अपनी सम्पत्ति को दान देने का निर्णय लिया। पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को उदारता के साथ दान करने के लिए प्रोत्साहित किया और बताया कि उदारता से दान देने का क्या परिणाम होता है।

(5) मेज़बानी करना।

पढ़ें मत्ती 6:19724; लूका 6:38; 14:12-14; फिलिप्पियों 2:3-4; इब्रानियों 13:1। हालांकि यीशु मसीह ने सारे मसीहियों को पूरी तरह पूर्ण रूप से स्वैच्छिद दान देने की जीवन शैली के नहीं बुलाया है, लेकिन उसने मसीहियों को धन के लोभ से आन्तरिक आजादी में, त्यागपूर्ण भावना के साथ अपनी चीजों का साझा करना, जो लोग वापस नहीं दे सकते उन्हें मेहमान नवाज़ी करना और लोगों के फायदे के लिए निःस्वार्थ भावना से सेवा करना।

7. मसीही जीवन शैली में संसार के अन्दर एक जिम्मेदार नागरिक होना शामिल होता है।

सिखाएं। संसार भर में मसीही मण्डलियों ने लाउसाने वाचा बान्धी है। जिसमें यह लिखा है: "हालांकि मनुष्य के साथ मेल मिलाप करना परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने के जैसा नहीं है, न ही सामाजिक कार्य प्रचार कार्य के समान है, नहीं राजनीतिक मुक्ति उद्धार के समान है, फिर भी हम मानते हैं कि सुसमाचार प्रचार करना और सामाजिक-राजनैतिक कामों में सम्मिलित होना दोनों मसीही कर्तव्य हैं। क्योंकि दोनों ही परमेश्वर और मनुष्य के सिद्धान्तों की, अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम और यीशु मसीह के प्रति हमारी आज्ञाकारिता की आवश्यक अभिव्यक्ति है।"

मसीही लोग कभी सामाजिक-राजनैतिक दंगों या झगड़ों का भाग नहीं हो सकते(मत्ती 26:52),लेकिन उन्हें अपने समाज को एक नमूना बनकर, अपनी शिक्षाओं, प्रशिक्षण और दिव्यागों, गरीबों, तथा समाज के दलितों की देखभाल करने जैसे कृपा पूर्ण कार्य करके प्रभावित करना चाहिए।

8. मसीही जीवन शैली में सम्पत्ती के प्रति जिम्मेदार स्वभाव होना शामिल होता है।

पढ़ें 1 तीमुथियुस 6:9-10,17-19।
खोजें और चर्चा करें। एक मसीही के लिए किस तरह से धनी होना सही और किस तरह गलत है?
ध्यान दें। 1 तीमुथियुस 6:17-19 हमें स्पष्ट तौर पर बताता है कि धनी *होना कोई गलत बात नहीं है।* 1 तीमुथियुस 6:9-10 हमें सिखाता है कि *धनी होने की चाहत रखना गलत है,* और जो लोग धन के पीछे भागते हैं वे अन्त में सब प्रकार के फंदों व हानिकारक लालसाओं में फंस जाते हैं। भ्रष्टाचार, लौटरी, जुआ खेलकर या अपराध करके धनी होना गलत है। लेकिन अगर कोई मनुष्य परमेश्वर द्वारा उसे बहुत सी चीजें सौंपने या आशीष देने के कारण धनी है तो, धनी होना कोई गलत बात नहीं है। परमेश्वर ने ही सारी आशीषों और धन धान्य को उसके हाथ में सौंपा है, क्योंकि वह उस धन के साथ कुछ काम करना चाहता है।

पद 17 में लिखा है कि धनी मसीही को अभिमानी या आत्मसन्तुष्ट नहीं होना चाहिए। उसे कभी घमण्डी या अंहकारी न होना चाहिए और उसे कभी परमेश्वर की बजाय अपनी धन सम्पत्ती पर निर्भर नहीं होना चाहिए। उसे नम्र और परमेश्वर पर निर्भर होना चाहिए। लेकिन वह परमेश्वर द्वारा दी गयी आशीषों का आनन्द उठा सकता है।

पद 18 में लिखा है कि वह भले कामों को करने में धनी और दूसरों को दान देने में इच्छुक और उदार होना चाहिए।

पद 19 में बताता है कि उसे "आने वाले राज्य के लिए" धन इकट्ठा करना चाहिए।(मत्ती 6:19-24)। ये वचन हमें बताते हैं कि उसे परमेश्वर के राज्य को ध्यान में रखकर भले काम करना और अपनी सम्पत्ति को साझा करना चाहिए। धनी मसीहियों को एक मुख्य लक्ष्य दिया गया है: अपनी सम्पत्ति को बुद्धिमानी के साथ जितना हो सके उतना निवेश करें। उदाहरण के तौर पर, वे अपनी धन को जरूरत मन्द लोगों के बीच में बांट सकते हैं। या वे मसीही कार्यकर्ताओं और मसीही कार्यों की सहायता कर सकते हैं।"

9. मसीहियों की जीवन शैली एक भिन्न जीवन शैली है।

पढ़ें दानिय्येल 6:1-4।
खोजें और चर्चा करें। मसीहियों की जीवन शैली कैसी होनी चाहिए?

ध्यान दें। दानिय्येल 6:3-4 में हम पढ़ते हैं, "जब यह देखा गया कि दानिय्येल में उत्तम आत्मा रहती है, तब उसको उन अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली; वरन राजा भी यह सोचता था कि वह उसे सारे राज्य के ऊपर ठहराए। तब अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य के विषय में दानिय्येल के विरूद्ध दोष ढूँढ़ने लगे; परन्तु वह विश्वास योग्य था और उसके काम में कोई भूल या दोष न निकला और वे ऐसा कोई अपराध या दोष न पा सके।"

वर्तमान में हर जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है, खास तौर पर व्यापार जगत और सरकारी विभागों में। ये भ्रष्टाचारी अधिकारी स्वयं तो धनी बन जाते हैं, लेकिन दूसरों के जीवन को अनापेक्षित ढंग से कष्टों से भर देते हैं। दानिय्येल ने भी इसी तरह के समाज में जीवन व्यतीत किया लेकिन उसने सबसे अलग जीवन शैली अपनाने की हिम्मत की। दानिय्येल ने अपने आप को भ्रष्टाचार से मुक्त रखकर अन्य अधिपतियों से अलग साबित किया। जिसके कारण उसे अपने व्यक्तिगत जीवन व अपनी नौकरी और अपनी प्रतिष्ठा को लेकर काफी तकलीफों का सामना करना पड़ा। लेकिन, सारी कठिनाईयों को सहने के बावजूद परमेश्वर ने दानिय्येल को सम्मानित किया।

इसलिए, दानिय्येल के समान बनें! मसीही व्यापारी, मसीही अधिपति, *मसीही* न्यायधीश या एक *मसीही* कार्यकर्ता के रूप में अपने आप की अलग पहिचान स्थापित करने का प्रयास करें! अपने आपको ईमानदार, भरोसेमन्द और अपने काम के प्रति कभी लापरवाही न बरतने वाला बनाकर रखें।

खुद को अलग बनाएं!
दूसरों से अलग होने की हिम्मत करें!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना " पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -**प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।** इस बात का ध्यान दें कि आप बच्चे का पालन पोषण करते समय आप बाइबल के सिद्धान्तों को उसके जीवन के आधार के रूप में इस्तेमाल करें।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। यहूदा और 1 पतरस 1-2** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. याद करें। नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(2) सारी बातों में उन्नत्ति करें, नीतिवचन 22:6।** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

5. बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 17 के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यपन करें।** जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।